eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

भारतेन्दु के नाटकों में राष्ट्रीयता एवं पुनर्जागरण चेतना

डॉ0 प्रियंका रानी[1]
[1]सहायक प्रोफेसर– हिन्दी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिन्दकी, फतेहपुर उ0प्र0

Received: 15 August 2024 Accepted & Reviewed: 25 August 2024, Published : 31 August 2024

Abstract

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक और हिन्दी गद्य साहित्य को आधुनिक चेतना से जोड़ने वाले बाबू हरिश्चन्द्र का जन्म 6 सितम्बर 1850 ई० को हुआ था। भारतेन्दु सहृदयी, परोपकारी, देशसेवी थे। भारतेन्दु ने साहित्य और समाज को एक युगान्तकारी देन दी। फलस्वरूप हिन्दी के आधुनिक युग के प्रथम चरण का नाम ही भारतेन्दु युग हो गया, भारतेन्दु युग सामाजिक चेतना का प्रवेश द्वार रहा है।

कीवर्ड – आधुनिक हिन्दी साहित्य, भारतेन्दु, नाटक विधा, राष्ट्रीयता, पुनर्जागरण चेतना

Introduction

"राष्ट्र के हितकारी कार्यों और हिन्दी की उन्नति की उन्नति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहने के कारण हिन्दी पत्र संपादकों ने भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को भारतेन्दु की पदवी दी, जिसका शाब्दिक अर्थ भारत का इन्दु अथवा चन्द्रमा होता है। 27 सितम्बर सन् 1880 के सार सुधानिधि पत्र में पं० रामेष्वरवृत व्यास ने अपना 'भारतेन्दु' प्रस्ताव विधिवत प्रकाशित कराया। इसके पश्चात् समग्र भारत देश में भारतेन्दु' नाम प्रचलित हो गया।"[1]

राष्ट्रीयता मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों में से एक है इस वृत्ति के प्रति रागात्मकता उसे अपने राष्ट्र को समृद्धशाली व उन्नत रूप में देखने के लिए तत्पर बनाए रखती है। राष्ट्र के चाहे राजनीति हो, सामाजिक हो या आर्थिक हो, धार्मिक हो या कुदरत सर्जित या मानव सर्जित संकट हो तब राष्ट्रीय भावना प्रखर रूप में दिखाई पड़ती है। तब अधिकांश मानव समुदाय देशप्रेम से प्रेरित होकर राष्ट्र कल्याण हेतु अपनी अपनी क्षमता एवं रूचि के अनुरूप राष्ट्रीय सेवा में योगदान देता है।

हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीयता का विशेष स्वरूप 16वीं शताब्दी में भारतेन्दु साहित्य में दिखाई देता है। ऐसे समय में भारत वर्ष परतंत्रता में डूबा हुआ था। देश के सामने तब राष्ट्रीय स्वतंत्रता की मूलतः समस्या थी। अग्रेजों की गलत नीति से हमारा शोषण हो रहा था, अत्याचार हो रहे थे तब भारतेन्दु के नाटकों का देश प्रेम नव जागरण कार्य करता रहा था। भारतेन्दु युग द्रष्टा और युग सृष्टा दोनों ही थे। डॉ० दशरथ ओझा के मतानुसार भारतेन्दुजी अपने ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक, प्रहसन आदि सभी नाटकों मे यथा स्थान और यथावसर देश की राष्ट्रीय चेतना को उत्तेजित करने का दृश्य उपस्थित करते रहे।[2] सही मायने में भारतेन्दु के नाटकों में राष्ट्रीयता का भाव जागृत हो रहा था. वैसे तो भारतेन्दु युग वस्तुतः राष्ट्रीय चेतना के विकास का एक महत्वपूर्ण युग है। उस समय मानव समाज में राष्ट्रीयता का भाव जागृत करने के लिए सर्वश्रेष्ठ माध्यम था नाटक जिनके माध्यम से जन–जीवन में सबसे कम समय में राष्ट्रीय चेतना जगायी गयी थी, सर्वप्रथम भारतेन्दु कृत 'भारत दुर्दशा' नाटक के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का विकास हुआ। वस्तुतः भारतेन्दुजी राष्ट्रीय भावना एवं नव जागरण के अग्रदूत थे। उनके अधिकांशत नाटकों में राष्ट्रीय चेतना दिखाई देती है। और उनमें राष्ट्रीयता के विभिन्न तत्व समाविष्ट है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

पराधीन भारत की करुण स्थिति का चित्रण सर्वप्रथम 'भारत दुर्दशा' में किया है। प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है। भारत की यथार्थता का चित्रण किया गया है। भारतेन्दु का मूल विचार राष्ट्रप्रेम का संचार करना ही था।

रोवहु सब मिलि के आवहु भारत भाई

हा हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।

भारत दुर्दशा के समान 'भारत जननी' में भी भारतेन्दुजी ने देश की दुर्दशा का चित्रण करके राष्ट्रीय भावना जागृत करने का प्रशंसनीय प्रयत्न किया है। देश की करूण दशा को देखकर भारतेन्दुजी ने आंसू बहाकर जन–जन को अपनी वस्तविक स्थिति से अवगत किया है।

अतीत को आलम्बन बनाकर राष्ट्रीयता का नया स्वरूप दिखाना ही भारतेन्दु के नाटकों का मूल उद्देश्य था। भारतेन्दु जानते थे कि भारत की प्राचीन संस्कृति पर दृष्टि डाले बिना भारतवर्ष का उत्थान कठिन है। इसलिए देशवासियों के मन में प्राचीन गौरवगान के माध्यम से अपने देश के लिए अनुराग उदीप्त करना प्रमुख लक्ष्य था। भारतीय राष्ट्रीय चेतना के विकास का सर्वप्रथम नाटक भारतेन्दु कृत 'भारत दुर्दशा' माना गया है। इस नाटक में भारत के अतीत का गौरवशाली चित्र प्रस्तुत किया गया है।

सबके पहिले जेहि ईष्वर धन बल दीनो।

सबके पहिले जेहि सभ्य विद्याताकीनो

सबके पहिले जो रूप रंग रस भीनो

सबके पहिले विद्याफल जिन गृहि लीनो।

सबके पीछे सोई परत लखाई

हा हा भारत दुर्दशा न देखी जाई।"[3]

प्राचीन काल में भारत प्रत्येक क्षेत्र में सर्वप्रकार से उन्नत था. वही अतीत का भव्य एवं समृद्ध भारत अपनी नैतिक एवं सामाजिक विकृतियो तथा पराधीनता के अभिशाप से आज इतनी निम्न कक्षा तक पहुँच गया है। इसे ध्यान में रखकर भारतेन्दु जी ने अपने नाटकों में महापुरूषों तथा वीरों के प्रेरक चरित्रों की महिमा से भारतवासियों के हृदय में देश के प्रति प्रेम आस्था और राष्ट्रीय भावना जागृत की है। अन्यायी, अत्याचारी, अधोगति से मुक्त होने के लिए भारतेन्दु जी ने प्रभावी नाटक लिखे।

'कहाँ गए विक्रम भोज, राम, बलि, कर्ण, युधिष्ठिर, चन्द्रगुप्त, चाणक्य कहाँ नासे करिकै थिरे। यही भावना सत्य हरिश्चन्द्र और नीलदेवी में भी मुखरित हुई है। नीलदेवी में राजपूतों की वीरता पर बल देकर राष्ट्रीय भावना जागृत की है।

'इन दुष्टों से पाप किया जायेगा तो वह पुण्य ही माना जायेगा।'

'जो भारत जग में रहा सब सो उत्तम देस.....

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

भारत कभी विष्वगुरू के पद पर आसीन था। प्राचीन संस्कृति साहित्य और इतिहास से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय भावना जागृत करने ज्योति प्रदीप्त करने के हेतु भातेन्दुजी के नाटकों को काफी सफलता मिली है।

भारतेन्दु युग में महिलाओं की स्थिति अत्यंत करूण थी। सती प्रथा कन्या हत्या. अनमेल विवाह, दासी प्रथा, पर्दा प्रथा आदि से नारी का शोषण होता था। कुप्रथाएँ अधिक थी। नारी जागरण की भावना उदीप्त करने वाले नाटकों में भारतेन्दु कृत 'नीलदेवी' प्रमुख था। इस नाटक में नारी के अबला रूप की तुलना में नारी शक्ति स्वरूप, तेजस्विनी, निर्भीकता इत्यादि की प्रतिमूर्ति के रूप में चित्रित किया गया है। नारी मात्र मनोरजन का उपकरण मात्र नहीं है। समाज के विकास, गौरव, संस्कार, रक्षिता का प्रतीक है। नारी शिक्षा, नारी स्वतंत्रता पर बल दिया है।

धनि धनि भारत की छात्रानी

वीर कन्या का वीर प्रसविनी, वीर वधू जग जानी.....

इसके जसकी तिह लोक मां अमल ध्वजा फहरानी।

'भारत जननी' नाटक में नारी की वीरता औदर्य और विद्या को महत्व दिया है। वैवाहिक समस्याओं का समाधान करके नारी उत्थान पर विशेष बल दिया है।

भारतेन्दुजी कृत नाटक भारत दुर्दशा में तत्कालीन आर्थिक स्थिति का, अंग्रेजों की गलत शोषण की नीति का चित्रण किया है। 'भारत जननी' और 'अंधेर नगरी' में भारतेन्दु ने व्यंग्यशैली का प्रयोग करके प्रहार किए हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय चेतना का कार्य किया है।

पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित भारतीय अपने आपको भूल चुके थे। इसलिए पुनः आत्म स्मृति, स्वदेशानुराग स्वदेशी वस्तु, वेशभूषा, आचरण, स्वधर्म एवं निजी संस्कृति, भाषा के प्रति आसक्ति एवं प्रेम की भावना जागृत करना भारतेन्दु के नाटकों का विचार बोध रहा है। भारत दुर्दशा के पांचवे अंक में तत्कालीन देश–हितैषियों की सभा के माध्यम से देशवासियों में जागृति लाने का पूर्ण प्रयास किया गया है। इस नाटक में राष्ट्रीय योजनाएँ भी प्रस्तुत की है। उदाहरण के तौर पर सार्वजनिक सभा करना, हिन्दुस्तानी कपड़ा तैयार करना तथा भारतीय भाषाओं का महत्व आदि नीलदेवी में भी अपने देश एवं अपनी संस्कृति को महत्व दिया गया है।

एक पागल के मन में निजत्व अर्थात् अपने देश के प्रति आकर्षण भावना जागृत करना विशिष्ट समाज पर व्यंग्य है।

बाल विवाह, अनमेल विवाह, मद्यपान व्यसन, वृद्धावस्था में विवाह, कुरिवाज आदि का विरोध करके सामाजिक सुधार द्वारा देश भक्ति पर बल दिया है। दुःखिनी बाला' बुराइयों को देखकर समझकर अच्छाइयों की ओर बढ़ेंगे। 'विषस्य विषमौषधम' में सामाजिक सुधार द्वारा राष्ट्रीय भावना जागृत की गई है।

भारतेन्दुजी सच्चे देशभक्त थे देश प्रेम उनके रोम रोम में समाया. हुआ था। यही देश प्रेम उनके नाटकों में दृष्टिगत होता है। 'भारत दुर्दशा' नाटक में सभ्य व्यक्तियों के द्वारा सभा का आयोजन किया गया है, जिसमें राष्ट्र के उत्थान हेतु विचार विमर्श किया जाता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 03, Issue 08, August 2024

उठो–उठो सब करन बांधों शस्त्रन शान घरौरी

विजय निशान बजाय बावरे आगे पांव धरौरी।

संक्षेप में भारत दुर्दशा, भारत जननी और नीलदेवी नाटकों में देश प्रेम के उदाहरण है। स्वदेश से प्रेरित होकर भारतेन्दुजी ने प्रभु से प्रार्थना की है कि देशवासियों के सभी कष्ट, दोष कुरीती, कुण्ठा आदि का नाश हों, देश प्रेम, सदाचार, सत्यनिष्ठा, कर्तव्य पालन की भावना प्रत्येक भारतीय मे जागृत हो। भारतेन्दु ने 'सत्य हरिश्चन्द्र' लिखकर सत्कर्म की प्रेरणा दी है।

अंग्रेजों की पराधीनता कष्टकर थी। परिणाम स्वरूप उस युग में भारतीयों में दुख, गुलामी निराशा दिखाई पड़ती थी। भारतेन्दुजी ने अपने नाटकों में परिश्रम पर बल देते हुए दासवृत्ति, गुलामी से मुक्त होने के लिए चित्रांकन किया। नीलदेवी में, सत्य हरिश्चन्द्र में भारत दुर्दशा आदि में स्वाधीनता की भावना को महत्व दिया है। देश को अमर चेतना दी।

भारतेन्दुजी के नाटक रंगमंच की दृष्टिसे महत्वपूर्ण नाटकों की अभिनेयता में राष्ट्र प्रेम दिखाई देता है। उस समय अधिकांष भारतीय जनता निरक्षर थी पुस्तकों को पढ़ने में असमर्थ थी। उसको समझाने, उस में नवजागरण की ज्योत जगाने का उत्कृष्ट साधन नाटकों का अभिनय था।

नाट्य जगत के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सच्चे देशभक्ति, समाज सुधारक, नव जागरण के अग्रदूत माने गये हैं। प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग करके देशवासियों को जागृत किया है। उन्होंने अकाल, महंगाई, महामारी, दरिद्रता आदि का वर्णन करके तत्तकालीन परिस्थितियों से अवगत कराया है। निराशा में से मुक्त होकर धैर्य, साहस से मेहनत करके समस्याओं के निराकरण पर बल दिया है। ईष्वर से देशोद्धार हेतु प्रार्थना भी की है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि भारतेन्दु जी ने ऐतिहासिक, सामाजिक, पौराणिक, प्रहसन आदि सभी प्रकार के नाटकों में यथास्थान यथा अवसर देश की राष्ट्रीय भावना को उत्तेजित किया है। राष्ट्रीय चेतना का प्रशंसनीय कार्य किया है।

–: सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. उन्नीसवीं षताब्दी की हिन्दी पत्रकारिता में सामाजिक चेतना–राहुल रंजन, पृष्ठ–57।
2. हिन्दी नाटक : उद्‌भव और विकास, डॉ0 दषरथ ओझा पृष्ठ–208।
3. भारतेन्दु और नर्मद का तुलनात्मक अध्ययन, डॉ0 अरविन्द कुमार देसाई पृष्ठ–140।
4. भारतेन्दु ग्रन्थावली (नाटक) संपादक : षिवप्रसाद मिश्र 'रूद्र' प्रथम खण्ड–भारत दुर्दषा पृष्ठ–113।
5. नीलदेवी भारतेन्दु पृष्ठ–104।